

आध्यात्मिकता के पथ पर बढ़ते चरण गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका **मंत्र-तंत्र-यंत्र** विज्ञान

प्रति माह पढ़िए

- साधना ज्ञान में रोचकता की त्रिवेणी: अनूठी साधनाएँ
- आकस्मिक धन प्राप्ति
- सम्मोहन • रोग निवारण
- ऋण मुक्ति • पौरुष प्राप्ति
- आयुर्वेद • ज्योतिष द्वारा समस्या निवारण



साथ ही प्रत्येक वार्षिक सदस्य को उपहार में देते हैं कोई एक दुर्लभ यंत्र. . . सर्वथा निःशुल्क उसके घर में या व्यापार स्थल में स्थापित होने योग्य

नोट - पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/- डाक व्यय १८/- अतिरिक्त, चेक स्वीकार्य नहीं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.), फोन-०२६१-३२२०६

संरक्षक : डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

शिव साधना पूजन युक्त



अरविन्द प्रकाश
जोधपुर
म-सीरिज

रहस्य रोमांच
जीवन को झकझोर कर रख देने वाली
पुस्तक श्रृंखला



एस-सीरिज

में उपलब्ध हैं

अद्भुत और सांस रोक कर पढ़ने योग्य ये छः पुस्तकें
प्रथम सीरिज

- . तांत्रिक त्रिजटा अघोरी
- . भुवनेश्वरी साधना
- . अप्सरा साधना सिद्धि
- . सिद्धाश्रम
- . मैं बाहें फैलाए खड़ा हूँ
- . हंसा! उड़हूँ गगन की ओर

प्रथम सीरिज ३०/- सेट
द्वितीय सीरिज ४०/- सेट

द्वितीय सीरिज

- . सौन्दर्य
- . तारा साधना
- . जगदम्बा साधना
- . तंत्र साधनाएं
- . स्वर्ण सिद्धि
- . उर्वशी साधना
- . शिव साधना
- . हिप्नोटिज्म

अरविन्द प्रकाशन,

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.)

टेली-०२६९-३२२०६

शिव साधना

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

अरविन्द प्रकाशन

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर (राजस्थान) - ३४२००९

फोन: ०२६९-३२२०६

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : अरविन्द प्रकाशन
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)-३४२००९, फोन: ०२६९-३२२०६
१६६३
संस्करण :
मूल्य : ५.०० (पांच रुपये)
मुद्रक : ताज प्रेस, ए.-३५/४, मायापुरी, दिल्ली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पुस्तिकामें प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पुस्तिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पुस्तिकामें प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। किसी भी सम्बंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पुस्तिका परिवार इस सम्बंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे। ★

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
१.	शिव अनन्त शिव कथा अनन्ता	०६
२.	महामृत्युञ्जय विधान	१०
३.	अमरनाथ दर्शन	१६
४.	शिव पूजन	२८
५.	शिव पूजन में ध्यान देने योग्य बातें	४२

एस-सीरिज

दो शब्द

भारतीय ज्ञान-विज्ञान अपनी श्रेष्ठता और गहनता के कारण विश्व-विख्यात रहा, और भारतीय विद्याओं की महत्ता आज के वैज्ञानिक युग में भी दिन-प्रतिदिन स्पष्ट हो रही है किंतु यह खेद का विषय है कि यही ज्ञान-विज्ञान अपनी ही धरती पर उपेक्षित और व्यंग की दृष्टि से देखा जाता है, दृष्टिकोण में आए परिवर्तन के साथ-साथ भारतीय ज्ञान की दुरुहता भी एक प्रमुख कारण रही है क्योंकि इसे अपनी ही सम्पत्ति बनाए रखने के प्रयास में न केवल तोड़-मरोड़ की गई अपितु यह नीरस, जटिल और अस्पष्ट भी हो गया तथा समाज ऐसे साहित्य को भय-मिश्रित जिज्ञासा से देखने लग गया।

इस खेद-जनक स्थिति का समापन करने के लिए हमने एक प्रयास किया कि ज्ञान और साधना की सरस ढंग से प्रस्तुति हो और अरविंद प्रकाशन के द्वारा “एस सीरीज” में रोचक, तथ्यपरक व ज्ञान-वर्धक साहित्य का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके प्रथम सेट के अंतर्गत छह पुस्तकें प्रकाशित की गई- **तांत्रिक त्रिजटा अघोरी, भुवनेश्वरी साधना, हंसा उड़हूँ गगन की ओर, मैं बाहे फैलाए खड़ा हूँ, सिद्धाश्रम, एवं अप्सरा साधना एवं सिद्धि**। इस सेट की प्रत्येक पुस्तक अपने ढंग की विशिष्ट व रोचक रही। उदाहरण के लिए पाठक वर्ग ने पहली बार ही त्रिजटा अघोरी जैसे प्रबल व्यक्तित्व का परिचय पाया और ‘सिद्धाश्रम’ के नाम से विख्यात सिद्ध स्थली की प्रामाणिक जानकारी ली। पाठक वर्ग ने इस सेट का उत्साहपूर्ण ढंग से स्वागत किया और साधनात्मक साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त जड़ता और नीरसता समाप्त करने का हमारा प्रयास सफल रहा। इन सभी पुस्तकों का आधार पूज्यपाद गुरुदेव से प्राप्त सूत्र एवं उनके गृहस्थ व सन्यस्त शिष्यों के प्रामाणिक अनुभव

रहे। अपने-आप में मौलिक व अनुभूत तथ्यों पर आधारित होने के कारण ही ये पुस्तकें जन मानस को गहरे तक जाकर न केवल छू सकीं वरन् उन्हें साधना के लिए भी नई चेतना प्रदान करने में समर्थ रहीं। ऐसा सब कुछ संभव होने में हमें कोई आश्चर्य नहीं रहा क्योंकि न केवल इन पुस्तकों के वरन् इन सभी शिष्यों के पीछे जो चैतन्य व्यक्तित्व है, जिनके ज्ञान और निर्देशन में इन सभी साधकों ने साधनाएं सम्पन्न कर सिद्धि पायी है, और अनेक रोमांचक अनुभव प्राप्त किए हैं (और जो इन पुस्तकों का आधार बने) उनका नाम है **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** जो अपने सन्यासी शिष्यों के मध्य परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के रूप में विख्यात हैं। एक ही व्यक्तित्व में ज्ञान की अनेक धाराएं समाहित देख कर वास्तव में आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। पूज्यपाद गुरुदेव के व्यक्तित्व से जुड़ी सैकड़ों-हजारों, घटनाओं के आधार पर यदि उनके शिष्यों के अनुभव एकत्र किए जाएं तो वह एक विशाल ग्रंथ का आकार ले लेगा।

वर्तमान में हमने इसी विशाल ज्ञान-भंडार में से पाठकों की रुचि व हित को ध्यान में रखकर इस द्वितीय सेट का निर्माण किया है। जिसके अन्तर्गत **जगदम्बा साधना, सौंदर्य, शिव साधना, उर्वशी, स्वर्ण सिद्धि, तारा साधना, तंत्र साधना एवं हिप्नोटिज्म**, शीर्षक से आठ पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। अपने लघु-कलेवर में भी प्रत्येक पुस्तक सम्बन्धित विषय से पूर्ण ज्ञान समेटे ही है साथ ही अत्यंत सहज और बोधगम्य शैली में--

हमें आशा है कि प्रथम सेट की ही भांति यह द्वितीय सेट भी पाठकों की रुचि के अनुकूल तथा जीवन में लाभ प्रदान करने में समर्थ होगा।

— प्रकाशक

शिव अनन्त

शिव कथा अनन्ता. . .

देवाधिदेव भगवान शंकर आदि देव हैं, 'श्वेताश्वेतरोपनिषद्' के अनुसार "सृष्टि के आदिकाल में जब अन्धकार ही अन्धकार था, न दिन था, न रात थी, न सत् था, न असत् था, तब केवल एक निर्विकार शिव (रुद्र) ही थे।" महाभारत के अनुशासन पर्व में तो उन्हें ब्रह्मा व विष्णु का रचयिता भी कहा गया है, इसीलिए तो उन्हें देवों का देव महादेव कहा गया है।

एकाकी शिव प्रायः योगी रूप में ही प्रकट हुए हैं, शिव योगीराज हैं, योगीधीश्वर हैं, उनका रूप विलक्षण होते हुए भी प्रतीक-पूर्ण है। उनकी स्वर्णिम लहराती जटा, उनकी सर्वव्यापकता की सूचक है, जटा में स्थित गंगा कलुषिता-नाश का तथा चन्द्रमा अमृत का द्योतक है, गले में लिपटा सर्प, कालस्वरूप है, जिस पर शिवाराधना कर विजय पाई जा सकती है, इस सर्प अर्थात् काल को वश में करने से ही ये 'मृत्युञ्जय' कहलाये। त्रिपुण्ड्र,

योग की तीनों नाड़ियों-इडा, पिंगला, एव सुषुम्ना की द्योतक होने के साथ-साथ भविष्य दर्शन का प्रतीक है। उनके हाथों में स्थित त्रिशूल तीन प्रकार के कष्टों--दैहिक, दैविक, भौतिक के विनाश का सूचक है, तो त्रिफलयुक्त आयुध सात्विक, राजसिक, तामसिक -- तीन गुणों पर विजय प्राप्ति को प्रदर्शित करता है, कर स्थित डमरू उस ब्रह्म निनाद का सूचक है जिससे समस्त व्यञ्जन निकला है, कमण्डल समस्त ब्रह्माण्ड के एकीकृत रूप का द्योतक है, तो व्याघ्र चर्म मन की चंचलता के दमन का सूचक है। शिव का वाहन नंदी धर्म का द्योतक है, जिस पर वे आरूढ़ रहने के कारण ही धर्मेश्वर कहलाते हैं, उनके शरीर पर लगी भस्म संसार की नश्वरता की द्योतक है।

शिव और शक्ति मिल कर ही पूर्ण बनते हैं, शक्ति 'इकार' की द्योतक है, इसीलिए शिव में से 'इकार' अर्थात् शक्ति हटा दी जाय तो पीछे 'शव' ही रहता है, अतः शक्ति की सारूप्यता से ही 'शव' पूर्ण रूप से शिव कहलाते हैं, और यही इनका अर्द्धनारीश्वर रूप है। शैव दर्शन के अनुसार यह रूप 'ब्रह्म' और 'आत्मा' का समन्वित रूप है, जो द्वैतवाद का सूचक है। इस अर्द्धनारीश्वर रूप में शिव का आधा दायां भाग पुरुष का एवं आधा बायां भाग पार्वती का है। शिव वाले भाग में सिर पर जटाजूट, सर्पमाल, सर्पयज्ञोपवीत, सर्पकुण्डल, बाघम्बर, त्रिशूल आदि हैं, जब कि पार्वती वाले भाग में सिर पर मुकुट, कुण्डल,

सुंदर वस्त्र, सौम्य आभूषण, केयूर-मेखला, कंकण आदि है, इस प्रकार का रूप ही सुरम्य है तथा शैव-शक्ति का समन्वित स्वरूप है।

शिव का एक रूप हरिहर भी है, जिसमें 'हरि' अर्थात् विष्णु और 'हर' अर्थात् शिव का समन्वित स्वरूप है। यह पालन और संहार का सूचक है, मानव जाति के नित्य उज्ज्वल, नवीन रूप का द्योतक है।

भगवान् शंकर त्रिगुणात्मक हैं, ब्रह्मा स्वरूप-- सृजन कर्ता, विष्णु स्वरूप-पालन कर्ता एवं रुद्र स्वरूप--संहार कर्ता-इन तीनों ही रूपों का समन्वित रूप महादेव है; इसीलिए तो इन्हें "हरिहर पितामह" कहा गया है, अथर्ववेद में भगवान् 'शिव' को "हरिहर हिरण्यगर्भ" भी कहा गया है, अतः भगवान् शंकर, ब्रह्मा, विष्णु एवं सूर्य का समन्वित रूप जो शिव है, केवल मात्र इनकी पूजा ही समस्त देवताओं की पूजा-अर्चना है, जो कुछ दृश्य है वह शिव है, जो कुछ घटित है वह शिव है... यह सारा संसार शिवमय है, शिवस्वरूप है, शिवयुक्त है।

भगवान् शंकर स्वयं निर्विकार रहकर, विकारयुक्त विश्व की व्यवस्था करने में संलग्न हैं, कैलाश के उत्तुंग शिखर पर हिमाच्छादित चोटियों के मध्य "शंकर धाम" 'कैलाश' में न तो कोई चिन्ता है, और न कोई सन्ताप ही। स्वयं निर्मुक्त होते हुए भव बन्धन को तोड़ने में सक्षम, शिव के अतिरिक्त और

कोई देवता ऐसा नहीं है जो जन्म-मरण के कल्मष को धोकर अभय दे सके... स्वयं स्थिर और निश्चल होते हुए भी चराचर जगत के कण-कण में व्याप्त हैं, इसीलिए तो शंकर चराचरात्मक हैं, शंकर हैं, अभयंकर हैं।

शिव का अर्थ ही कल्याण है, शुभ है, मंगल युक्त है... जीवन में पूर्णता देने में शिव अग्रणी हैं, क्योंकि शिव भोग और मोक्ष दोनों के ही प्रदाता हैं, शिव औढ़ारदानी हैं, जो क्षण में ही पसीज कर भक्तों को अभय कर देते हैं। भगवान् शंकर आशुतोष हैं, जो भक्तों की जैसी इच्छा होती है, उसी के अनुसार भक्त की इच्छा तुरंत पूर्ण करने में अग्रणी हैं, इसीलिए तो शंकर को "भागश्च मोक्षश्च करस्थ एव" कह कर संबोधित किया है, इसीलिए तो भीष्म पितामह को केवल यही कह कर चुप हो जाना पड़ा कि 'जो सब में रहते हुए भी किसी को दिखाई नहीं देते, ऐसे महादेव के गुणों का वर्णन करने में, मैं सर्वथा असमर्थ हूँ - -

अशक्तोऽहं गुणान् वक्तुं महादेवस्य धीमतः ।

यो हि सर्वगतो देवो न च सर्वत्र दृश्यते । ।

★★★

महामृत्युञ्जय विधान

अकाल मृत्यु टालने की सर्वोत्तम साधना

महामृत्युञ्जय विधान या अनुष्ठान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण और श्रेष्ठतम कहा गया है। इस अनुष्ठान में अकाल मृत्यु को समाप्त करने का श्रेष्ठ भाव है और जिस व्यक्ति के जीवन में अकाल मृत्यु या बाल-घात योग हो, उसके लिए महामृत्युञ्जय विधान सर्वश्रेष्ठ है।

महामृत्युञ्जय मंत्र अपने-आप में अत्यन्त ही श्रेष्ठ और प्रभावयुक्त है तथा उच्च स्तर के साधकों ने भी इस बात को स्वीकार किया है कि यह मंत्र अपने - आप में महत्वपूर्ण और काल पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है।

नीचे मैं इस अनुष्ठान से संबंधित विधि प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिससे कि पाठक इससे लाभ उठा सकें --

अनुष्ठान में तथ्यों का ध्यान रखना आवश्यक है। अनुष्ठान एक ऐसी साधना प्रक्रिया है जो कठिन कार्यों को सरल

बनाने के साथ-साथ विशेष शक्ति का उपार्जन करती है।

अनुष्ठान तीन प्रकार के होते हैं- लघु अनुष्ठान -- चौबीस हजार मंत्र का होता है, और इसके बाद २४० आहुतियों का पुरश्चरण किया जाता है। मध्यम अनुष्ठान -- सवा लाख मंत्र जप का होता है जिसमें १२५० आहुतियां दी जाती हैं, तथा महापुरश्चरण या महाअनुष्ठान -- चौबीस लाख मंत्र जप का होता है, और इसके दसवें हिस्से की आहुतियां दी जाती हैं।

लघु अनुष्ठान को नौ दिन में २७ माला प्रतिदिन के हिसाब से, मध्यम अनुष्ठान ४० दिन में ३३ माला प्रतिदिन के हिसाब से तथा महाअनुष्ठान एक वर्ष में ६६ माला प्रतिदिन के हिसाब से जप करके सम्पन्न किया जाता है।

साधना काल में निम्न तथ्यों का ध्यान रखना चाहिए - -

१. अनुष्ठान शुभ दिन और शुभ मुहूर्त देखकर करना चाहिए।
२. इस अनुष्ठान को प्रारम्भ करते समय सामने भगवान शंकर का चित्र स्थापित करना चाहिए और साथ ही साथ शक्ति की भावना भी रखनी चाहिए।
३. जहां जप करें, वहां का वातावरण सात्विक हो तथा नित्य पूर्व दिशा की ओर मुंह करके साधना या मंत्र जप प्रारम्भ करना चाहिए।
४. जप करते समय लगातार घी का दीपक जलते रहना चाहिए।

५. इसमें चन्दन या रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करना चाहिए तथा ऊन का आसन बिछाना चाहिए।
 ६. पूरे साधना काल में ब्रह्मचर्य का पूरा-पूरा पालन करना चाहिए।
 ७. यथाशक्ति एक समय भोजन करना चाहिए और साधना काल में चेहरे के या सिर के बाल नहीं कटाने चाहिए।
 ८. अनुष्ठान करने से पूर्व मंत्र को संस्कारित करके ही पुरश्चरण करना चाहिए।
 ९. नित्य निश्चित संख्या में मंत्र जप करना चाहिए, कभी कम, कभी अधिक करना ठीक नहीं है।
 १०. शास्त्रों के अनुसार भय से छुटकारा पाने के लिए इस मंत्र का १,१०० जप, रोगों से छुटकारा पाने के लिए ११,००० मंत्र जप तथा पुत्र प्राप्ति, उन्नति एवं अकाल मृत्यु से छुटकारा पाने के लिए १,००,००० मंत्र जप का विधान है।
- धर्म शास्त्रों में मंत्र शक्ति से रोग निवारण एवं मृत्यु भय को दूर करने तथा अकाल मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की जितनी साधनाएं उपलब्ध हैं उनमें महामृत्युञ्जय साधना का स्थान सर्वोच्च है। हजारों-लाखों साधकों ने इस साधना से फल प्राप्त किया है, कोई भी साधक पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से इस साधना को करता है तो निश्चय ही वह सफलता प्राप्त करता है।

इसका सामान्य मंत्र निम्नलिखित है पर साधक को बीज युक्त मंत्र का ही जप करना चाहिए।

मंत्र

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । ।

(ऋ. ७-५-१२, यजुर्वेद ३-६०)

अर्थात् हम तीन नेत्रों वाले ईश्वर की उपासना करते हैं, मैं सुगन्धियुक्त और पुष्टि प्रदान करने वाले “उर्वारुक” की तरह मृत्यु के बंधन से मुक्त हो जाऊं।

विधि

साधक को शुभ मुहूर्त में प्रातः उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर गुरु-स्मरण, गणेश-स्मरण, शंकर-पूजन आदि के बाद निम्न प्रकार से संकल्प करना चाहिए।

संकल्प

ॐ मम आत्मनः श्रुति स्मृतिपुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं । अमुक यजमानस्य वा शरीरेऽमुकपीडा निराशद्वारा सद्यः आरोग्यप्राप्त्यर्थं श्रीमहामृत्युञ्जय देवता प्रीतये अमुकसंख्या परिमितं श्री महामृत्युञ्जयमंत्रजपमहं करिष्ये ।

विनियोग

हाथ में जल लेकर इस प्रकार पाठ करें - -

ॐ अस्य श्रीमहामृत्युञ्जयमंत्रस्य वामदेवकहोलवशिष्टा
ऋषयः पंक्तिगायत्र्युष्टिगनुष्टुप्छन्दांसि
सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रो देवता हीं शक्तिः श्रीं बीजं
महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास

निम्न मंत्रों से सिर, मुख, हृदय, लिंग और चरणों का
स्पर्श करना चाहिए ।

पुनः वामदेवकहोलवशिष्टऋषिभ्यो नमः मंद्दिन ।
पंक्तिगायत्र्युष्टुछन्दोभ्यो नमः मुखे, सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्र
देवतायै नमः हृदि, हीं शक्तये नमः लिंगे, श्रीं बीजाय नमः
पादयोः ।

करन्यास

ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय
शूलपाणये स्वाहा अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
ॐ हौं जूं सः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृतमूर्तये
मां जीवाय बद्ध तर्जनीभ्यां नमः ।
ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम् ॐ नमो
भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा मधमाभ्यां नमः ।

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो
भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हीं अनामिकाभ्यां नमः ॐ हौं
जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय
त्रिलोचनाय ऋग्यजुसाममन्त्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ हौं
जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय
अग्नित्रयाय ज्वल ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय
करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकम् ॐ नमो भगवते रुद्राय
शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः ।

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय
अमृतमूर्तये मां जीवाय शिरसे स्वाहा ।

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिपुष्टिवर्धनम् ॐ नमो
भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखाग्रै वषट् ।

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो
भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय हीं कवचाय हूँ ।

ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो
भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुस्साममन्त्राय
नैत्रत्रयाय वौषट् । ॐ हौं जूं सः भूर्भुवः स्वः
मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय ज्वल
ज्वल मां रक्ष रक्ष अघोरास्त्राय फट् ।

पद न्यास

त्र्यम्बकं शिरसि । यजामहे भ्रुवोः सुगन्धिं नेत्रयोः ।
पुष्टिवर्धनं मुखे । उर्वारुक गण्डयोः इव हृदये । बन्धनात्
जठरे । मृत्योर्लिङ्गे । मुक्षीय ऊर्वोः । मा जान्वोः । अमृतात्
पादयोः ।

ध्यानम्

फिर शंकर का ध्यान करें - -

हस्ताम्भोजयुगस्थकुम्भयुगला दुद्धृत्य तोयं शिरः,
सिञ्चन्तं करयोर्युगेन दधतं स्वांके सकुम्भौ करौ ।
अक्षस्रङ्मृगहस्तमम्बुजगतं मूर्द्धस्थचन्द्रस्रवत्
पीयूषार्द्रतनुं भजे सगिरिजं त्र्यक्षं च मृत्युञ्जयम् । ।

(सती खं ३८-२४)

ध्यान का स्वरूप इस प्रकार से है कि मृत्युञ्जय के
आठ हाथ दृष्टिगोचर हो रहे हैं। ऊपर के दो हाथों से दो कलश
उठाए हुए हैं, और नीचे वाले दो हाथों से वे सिर पर जल डाल
रहे हैं। सबसे नीचे वाले दो हाथों में भी वे दो कलश लिए हुए
हैं जिन्हें अपनी गोद में रखा हुआ है। सातवें हाथ में रुद्राक्ष
और आठवें में मृग धारण कर रखा है, उनका आसन कमल
का है, उनके सिर पर स्थित चंद्रमा निरंतर अमृत वर्षा कर रहा
है, जिससे शरीर भीग गया है, वे त्रिनेत्रयुक्त हैं, और उन्होंने

मृत्यु पर विजय प्राप्त कर ली है। उनके बांयी ओर भगवती
गिरिजा विराज रही है।

जप

ध्यान के बाद महामृत्युञ्जय का जप करना चाहिए।

मंत्र का स्वरूप इस तरह है:

ॐ हौं जूं सः, ॐ भूर्भुव स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगधिं
पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय
मामृतात् । सः भूर्भुवः स्वः ॐ । सः जूं हौं ॐ ।

यह सम्पुटयुक्त मंत्र है। इसका अनुष्ठान सवा लाख
मंत्र जप का माना जाता है। जप का दशांश-- हवन, हवन का
दशांश - तर्पण, तर्पण का दशांश-- मार्जन और ब्राह्मण भोजन
आदि करना चाहिए। जप रुद्राक्ष की माला से करना चाहिए।

यह रोग निवारण का अचूक विधान माना जाता है,
हजारों का अनुभूत है। कोई भी व्यक्ति श्रद्धापूर्वक इसे अपना
कर अभीष्ट लाभ प्राप्त कर सकता है।

लघु मृत्युञ्जय

ॐ जूं सः (नाम जिसके लिए अनुष्ठान किया जा रहा
हो) पालय पालय सः जूं ॐ ।

इसका पूर्ण अनुष्ठान ११ लाख मंत्र जप का है,
जिसका दशांश हवन करना चाहिए। शास्त्र ने इसे सर्वरोग

निवारक घोषित किया है।

मृत्युञ्जय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबंधनः।।

मंत्र जप

यदि कोई साधक केवल मंत्र जप करना चाहे, उनके लिए लघु मृत्युञ्जय मंत्र इस प्रकार है - -

ॐ जूं सः सः जूं ॐ

लघुत्तम मंत्र

महामृत्युञ्जय का लघुत्तम मंत्र इस प्रकार है -

ॐ ह्रीं जूं सः

बलिदान मंत्र

अनुष्ठान पूर्ण होने पर निम्न मंत्र से भगवान् मृत्युञ्जय को जासफल सम्पत्ति करना चाहिए -

“ॐ ह्रीं ह्रीं जूं सः नमः शिवाय प्रसन्न पारिजाताय स्वाहा”

वस्तुतः महामृत्युञ्जय विधान मृत्यु पर विजय प्राप्त करने का अद्भुत उपाय है जो साधक स्वयं न कर सके, उसे चाहिए कि वह योग्य ब्राह्मण से यह अनुष्ठान सम्पन्न करावे। यों भी आज के इस घात-प्रतिघात युग में प्रत्येक व्यक्ति को अग्रिम रक्षार्थ “महामृत्युञ्जय मंत्र” धारण कर ही लेना चाहिए।

★★★

अमरनाथ - दर्शन

भगवान् शंकर देवों के भी देव कहे जाते हैं। इस कलियुग में ये शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं तथा छोटी सी साधना से भी साधक पर प्रसन्न होकर उसे मनोवांछित फल दे देते हैं।

भारत में अनेक शिव मंदिर हैं, जहां श्रद्धालु भक्त जाकर उनके दर्शन करते हैं, और अपने-आपको धन्य मानते हैं। शिव विशेषांक में द्वादश ज्योतिर्लिंग के बारे में विस्तार से विवरण दिया गया है, परन्तु ऐसा कहा गया है कि जब तक साधक भगवान् अमरनाथ के दर्शन नहीं कर लेता तब तक उसकी जीवन यात्रा अपूर्ण है। वह चाहे पूरे भारत के प्रत्येक शिव मंदिर के दर्शन कर ले, परन्तु फिर भी उसकी यात्रा तब तक पूर्ण नहीं कही जा सकती, जब तक कि वह अमरनाथ मंदिर में स्थित प्रकृति निर्मित बर्फ शिवलिंग के दर्शन न कर ले। शिव संहिता में तो यहां तक कहा गया है कि केवल मात्र अमरनाथ के दर्शन करने से, समस्त शिव मंदिर एवं द्वादश ज्योतिर्लिंग

के दर्शन करने का फल प्राप्त हो जाता है।

अनुभव में भी यही आया है कि अमरनाथ के दर्शन करने से अपूर्व शान्ति मिलती है, दीर्घायु और स्वास्थ्य लाभ होता है तथा उसका गृहस्थ जीवन ज्यादा मधुर, ज्यादा सुखकर, ज्यादा आनन्ददायक बन जाता है।

हजारों-लाखों साधु, सन्यासी, गृहस्थ, यति, अमरनाथ में हिमालय पर स्थित बर्फ से निर्मित अद्भुत शिवलिंग के दर्शन कर अपने-आपको धन्य समझते हैं।

जब मनुष्य के प्रारब्ध उदय होते हैं, और पुण्य की वृद्धि होती है, तभी उसके मन में अमरनाथ यात्रा का विचार पैदा होता है। शास्त्रों के अनुसार जब मानव का शुभ समय आने वाला होता है, तभी वह अमरनाथ की यात्रा पर रवाना होता है। जब उसके जीवन की श्रेष्ठता का समय प्रारम्भ होता है, तभी वह भगवान अमरनाथ के दर्शन करने में सफल हो पाता है। इसलिए प्रयत्न करके भी, परिश्रम और कष्ट उठाकर के भी, आर्थिक परेशानी और अभाव अनुभव करते हुए भी व्यक्ति को चाहिए कि वह अमरनाथ की यात्रा करे और अपना जीवन धन्य करे। प्रयत्न तो यह करना चाहिए कि वह अपनी पत्नी और परिवार के साथ यात्रा करे, परन्तु यदि यह सम्भव न हो तो उसे व्यक्तिगत रूप से तो अवश्य ही अमरनाथ का दर्शन करना चाहिए।

इस मंदिर में भगवान अमरनाथ का दर्शन वर्ष में एक ही दिन होता है। इसके अलावा पूरे साल भर तक यह मंदिर

बर्फ से ढका रहता है, और मार्ग भी आच्छन्न रहने के कारण यात्रा सम्भव नहीं होती।

यह पूरे विश्व में एक मात्र ऐसा शिवलिंग है जो स्वतः बर्फ से निर्मित होता है। श्रावण पूर्णिमा को जब श्रद्धालु भक्त मंदिर में जाकर भगवान अमरनाथ के दर्शन करते हैं तो वह आश्चर्यचकित रह जाते हैं। प्रकृति द्वारा स्वतः ही स्वच्छ और धवल शिवलिंग का ऐसा अपूर्व निर्माण होता है कि आंखें तृप्त हो जाती हैं। यही नहीं जगत-जननी पार्वती, नन्दी और गणेश की भी छोटी-छोटी प्रतिमाएं बर्फ के द्वारा ही निर्मित हो जाती हैं।

वास्तव में ही यह उस पुण्य भूमि का प्रभाव ही है कि पूरे वर्ष तक यह मंदिर सपाट सा रहता है, परन्तु इस दिन एक विशेष प्रकार से शिवलिंग का निर्माण होता है, ऐसा लगता है जैसे किसी कुशल कारीगर ने प्रयत्न पूर्वक इस शिवलिंग का निर्माण किया हो।

अमरनाथ की यात्रा ज्यादा कठिन नहीं है, परन्तु फिर भी वृद्ध, बालक और ऐसे व्यक्तियों को यात्रा नहीं करनी चाहिए जिन्हें दमा या श्वास की बीमारी हो, क्योंकि इस यात्रा में पहाड़ पर चढ़ना होता है, और कुछ स्थानों पर ऑक्सीजन की न्यूनता पाई जाती है, फलस्वरूप वहां पर ऐसे लोगों को तकलीफ का सामना करना पड़ सकता है।

शास्त्रों में भगवान अमरनाथ के बारे में एक महत्वपूर्ण कथा पाई जाती है, जो इस प्रकार है-

एक बार भगवान शंकर और मां पार्वती कैलाश पर्वत से विचरण करते हुए अमर पर्वत पर आए (वर्तमान अमरनाथ का मंदिर जिस पहाड़ पर है, उस पहाड़ का नाम अमर पर्वत है और यहां से कैलाश पर्वत अत्यन्त निकट है। कहते हैं कि मत्स्येन्द्र नाथ यहीं से पैदल कैलाश पर्वत पर गए थे) मां पार्वती ने संजीवनी विद्या जानने की हठ की, परन्तु शंकर ने कहा कि यह विद्या अत्यन्त गोपनीय है, और इसे प्रकट किया जाना सम्भव नहीं है, परन्तु पार्वती ने अत्यधिक हठ किया और वहीं एक शिला पर बैठ गई तथा कहा कि जब तक आप संजीवनी विद्या का रहस्य प्रकट नहीं करेंगे तब तक मैं इसी शिला पर बैठी रहूंगी। आखिर पार्वती के हठ के सामने भगवान शंकर को झुकना पड़ा।

पर वे सावधान थे कि इस गोपनीय विद्या को प्रकट करना उचित नहीं है अतः उन्होंने वहीं खड़े-खड़े डमरू बजाया जिससे कि सौ योजन तक जितने भी पशु-पक्षी, कीट, पतंग आदि थे वे दूर चले गए तथा सौ योजन तक मां पार्वती और भगवान शंकर के अलावा कोई प्राणी नहीं रहा।

परन्तु उस स्थान से कुछ ही दूरी पर एक कबूतरी ने अण्डा दिया था, और वह उसे से रही थी। डमरू की ध्वनि सुनकर कबूतरी

उड़ गई, परन्तु अण्डा वहीं पड़ा रहा। संयोगवश डमरू की ध्वनि समाप्त होने के कुछ ही क्षणों के बाद वह अण्डा स्वतः ही फूट पड़ा और उसमें से नन्हा सा कबूतर निकल आया।

जब भगवान शंकर ने देखा कि डमरू की ध्वनि से कोई भी प्राणी निकट नहीं रहा है तो उन्होंने संजीवनी विद्या का रहस्य पार्वती को बताना शुरू किया। पार्वती 'हूं' की ध्वनि के साथ वह विद्या सुनती गई, परन्तु कुछ समय बाद उन्हें झपकी लग गई। भगवान शंकर आंखें बन्द किये यह रहस्य बता रहे थे, और 'हूं' की ध्वनि से आगे के रहस्य स्पष्ट करते जा रहे थे। जब मां पार्वती सो गई तो कबतूर ने 'हूं' की ध्वनि करनी शुरू कर दी। भगवान शंकर ने इस ध्वनि को सुनकर यह समझा कि पार्वती सुन रही हैं, अतः वे पूरे रहस्य को बताते चले गये। जब संजीवनी विद्या का रहस्य पूरा हुआ और भगवान शंकर ने आंखें खोलीं तो देखा कि पार्वती सो रही हैं। उन्होंने उसे जगाया और कहा तू तो सो रही है, तू कब से सो रही है? मैंने जो कुछ बताया है उसे कहां तक सुना है?

पार्वती ने जहां तक सुना था वहां तक बता दिया तो शंकर को अत्यन्त आश्चर्य हुआ कि फिर इसके बाद 'हूं' की ध्वनि कौन करता रहा। उन्होंने आंखें ऊंची उठाकर देखा तो भय के मारे वह कबूतर अपने स्थान से उड़ पड़ा। शंकर को अत्यन्त क्रोध आया कि मेरे डमरू के नाद के बाद भी यह प्राणी यहां कैसे बचा रह गया, अतः उन्होंने क्रोध कर उसके पीछे अपना त्रिशूल फेंका और स्वयं भी उसे मारने

के लिए झपटे।

कबूतर ने उड़ते-उड़ते कहा कि मैं संजीवनी विद्या सुन चुका हूँ, अतः न तो आपका त्रिशूल और न आप मुझे समाप्त कर सकते हैं, यह कहता हुआ वह उड़ता गया, परन्तु भगवान शंकर ने भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। आगे एक स्थान पर महर्षि वेद व्यास (महाभारत के रचयिता) की पत्नी सूर्य को अर्घ्य दे रही थी। तभी उसे जंभाई आई और उसका मुँह खुला। यह देखकर वह कबूतर मुँह के रास्ते वेद व्यास की पत्नी के पेट में जा पहुँचा। भगवान शंकर पीछा करते हुए वहाँ पहुँचे, और वेद व्यास की पत्नी से कहा कि मेरा शत्रु तेरे पेट में है अतः उसे बाहर निकाल। वेद व्यास की पत्नी ने कहा कि मैं पतिव्रता हूँ अतः आपकी लाल-पीली आँखों से घबराने वाली नहीं हूँ। आप में हिम्मत हो तो अपने शत्रु को प्राप्त कर लो। शंकर, नारी जाति और विशेषकर पतिव्रता पर कुछ भी प्रयोग नहीं कर सकते थे अतः उसके दरवाजे पर ही धरना देकर बैठ गये।

वह पेट में चौदह साल तक बैठा रहा, उसने अन्दर से वेद व्यास की पत्नी को पूछा कि मां, यदि तुझे तकलीफ हो रही हो तो मैं बाहर आ जाऊँ। मैं संजीवनी विद्या सुन चुका हूँ, अतः भगवान शंकर मेरा बाल भी बाँका नहीं कर सकते। वेद व्यास की पत्नी ने उत्तर दिया कि तू पेट में मानव बन चुका है, अतः तेरा बाहर आ जाना ही उचित रहेगा।

उसी समय वह कबूतर बालक रूप में बाहर आ गया और

मां ने उसे शुकदेव का नाम दिया। शुक रूप होने के कारण ही उसका नाम शुकदेव पड़ा। ज्योंही शंकर ने उसे देखा तो क्रोध कर अपने हाथ में त्रिशूल ले लिया। शुकदेव हँस कर बोले आप स्वयं जानते हैं कि मैं अब मृत्यु से परे हूँ अतः आपका त्रिशूल मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, यह कहते-कहते शुकदेव ने नम्रता पूर्वक भगवान शंकर की परिक्रमा की और वन की ओर बढ़ गये। भगवान शंकर उसकी नम्रता से अत्यन्त प्रसन्न हुए और पुनः उसी अमर पर्वत पर लौट आए जहाँ मां पार्वती बैठी हुई भगवान शंकर की प्रतीक्षा कर रही थीं। भगवान शंकर ने उन्हें सारी बात बताई तो पार्वती ने शुकदेव को अपना पुत्र माना और भगवान शंकर से निवेदन किया कि आप अमर रूप में यहीं पर विराजमान हों, साथ ही साथ यहाँ पर आकर जो आपके दर्शन करे, वह स्वयं ही अमर रूप तथा निश्चित रूप से रोग मुक्त बने।

भगवान शंकर ने तथास्तु कहा। इस प्रकार यह क्षेत्र पुण्य क्षेत्र है, शिव क्षेत्र है, अमर क्षेत्र है। यहाँ पर जो भी व्यक्ति जाता है, वह धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा या अपने कार्यों से जीवन में अत्यन्त ही अमरवत हो जाता है।

अमरनाथ की यात्रा के लिए कोई विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं है। दिल्ली से जम्मू एक्सप्रेस जम्मू तक पहुँचाती है। दिल्ली के कश्मीरी गेट से जम्मू के लिए डीलक्स बस भी जाती है जो कि दस घंटों में जम्मू पहुँचा देती है। यात्रियों को चाहिए कि वे जम्मू में प्रसिद्ध वैष्णव देवी के दर्शन करें जो कि अत्यन्त महत्वपूर्ण

धार्मिक स्थान है, यदि यात्री चाहें तो ज्वाला देवी के दर्शन भी कर सकते हैं। जम्मू से ज्वाला देवी जाकर आने में आठ - नौ घंटे लग जाते हैं। जम्मू से बस द्वारा श्रीनगर पहुंचा जा सकता है। मार्ग का प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोहर और रमणीय है। श्री नगर में गुलमर्ग, खिलनमर्ग, शंकराचार्य की पहाड़ी, निशातबाग, शालीमार बाग, आदि स्थान दर्शनीय हैं। यहां से पहलगांव तक बसे जाती है। पहलगांव अत्यन्त ही मनोहर स्थान है।

यहां से अमरनाथ के लिए यात्रा प्रारम्भ होती है। पहले छड़ी महाराज रवाना होते हैं। इस यात्रा में हजारों साधु-सन्त साथ होते हैं। राजकीय व्यवस्था की दृष्टि से किसी प्रकार की कोई न्यूनता नहीं होती। मार्ग में खाने-पीने, ठहरने, चिकित्सा-सुविधा, ऑक्सीजन, आदि की पूरी-पूरी व्यवस्था होती है। यात्रा के आगे-आगे छड़ी महाराज चलते हैं, इनके आगे कोई यात्री नहीं जा सकता। यह यात्रा श्रावण पूर्णिमा के पांच दिन पहले पहलगांव से प्रारम्भ होती है। मार्ग में हजारों साधु और सन्त दिखाई देते हैं। ठीक श्रावण पूर्णिमा को यह यात्री-दल अमरनाथ मंदिर के पास पहुंच जाता है और इस दिन मंदिर के कपाट खुलते हैं। यात्री और भक्त आश्चर्यचकित रूप से बर्फ से, निर्मित प्राकृतिक शिवलिंग के दर्शन करते हैं, और अपनी मनोवांछित इच्छा पूर्ण करते हैं।

मंदिर का किवाड़ खुलने पर अन्दर एक सफेद कबूतर बैठा दिखाई देता है। आश्चर्य की बात यह है कि श्रावण पूर्णिमा के ६ महीने

पूर्व ही किवाड़ बन्द हो जाता है क्योंकि इसके बाद हिमपात होने के कारण किसी भी यात्री का इधर आना संभव नहीं हो पाता। शिवलिंग के सामने एक घृत दीपक रख दिया जाता है, जो कि बराबर जलता रहता है। आश्चर्य इस बात का है कि ६ महीने तक वह कबूतर उस मंदिर में बन्द सा रहता है। इन ६ महीनों में वह बिना खाये-पीये कैसे जीवित रहता है यह भगवान अमरनाथ ही जानें।

इसके बाद यात्री अपनी सुविधा के अनुसार पहलगांव की तरफ लौटने लग जाते हैं, और मात्र तीन दिनों में ही पहलगांव पहुंच जाते हैं। यात्रा में कुली, टट्टू, भार उठाने वाले, तथा वृद्ध लोगों के लिए डोली उठाने वाले कहार सुविधा से मिल जाते हैं, इसलिए यह यात्रा निरापद और सुखदायक बनी रहती है। जो यात्री भगवान अमरनाथ के दर्शन करना चाहें, उन्हें चाहिए कि वह जल्द ही यात्रा प्रारम्भ कर दें, जिससे कि मार्ग के धार्मिक स्थलों को देखते हुए, ठीक समय पर छड़ी महाराज के यात्रा दल में शामिल हो सकें। एक साथ हजारों-लाखों लोगों की यात्रा कितनी आनन्दायक और तृप्तिदायक होती है, इसका अनुभव वही कर सकता है जो इस प्रकार की यात्रा में भाग लेता है। वास्तव में ही वे धन्य हैं, जो जीवन में दुर्लभ और स्वर्ग तुल्य भगवान अमरनाथ का दर्शन कर जीवन को सार्थक करने में सफल हो पाते हैं।

शिव पूजन

भगवान शंकर देवों के भी देव कहे जाते हैं। इस कलियुग में ये शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं तथा छोटी सी साधना से भी साधक पर प्रसन्न होकर उसे मनोवांछित फल दे देते हैं। अतः यहां दी जा रही शिव पूजन विधि से, शिव की अभ्यर्चना कर साधक अपना गृहस्थ जीवन ज्यादा मधुर, ज्यादा सुखमय और आनन्ददायक बना सकता है-

ध्यान

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं
रत्नाकल्पोज्ज्वलानगं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसम्भं ।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतिममरगणैर्व्याघ्रवृत्तिं बसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्च- वक्त्रं त्रिनेत्रम् । ।
स्वच्छं स्वर्णपयोद मौक्तिकजपावर्णैर्मुखैः पञ्चभिः
त्र्यक्षैरचितमीशमिन्दुमुकुटं सोमेश्वराख्यं प्रभुम् ।

२६

शूलटंक कृपाणवज्रदहनान्-नागेन्द्रघटांकुशां
पाशं भीतिहरं दधानममिताकल्पोज्ज्वलानगं भजे । ।

सद्योजात-स्थापन

पश्चिमं पूर्णचन्द्राभं जगत् सृष्टिकरोज्ज्वलम् ।
सद्योजातं यजेत् सौम्यं मन्दस्मित मनोहरम् । ।

वामदेव-स्थापन

उत्तरं विद्रमप्रख्यं विश्वस्थितिकरं विभुम् ।
सविलासं त्रिनयनं वामदेवं प्रपूजयेत् । ।

अघोर-स्थापन

दक्षिणं नीलजीमूतप्रभं संहारकारकम् ।
वक्रभ्रूकुटिलं घोरमघोराख्यं तमर्चयेत् । ।

तत्पुरुष-स्थापन

यजेत् पूर्वमुखं सौम्यं बालार्क सदृशप्रभम् ।
तिरोधानकृत्यपरं रुद्रं तत्पुरुषाभिधम् । ।

ईशान-स्थापन

ईशानं स्फटिकप्रख्यं सर्वभूतानुकंपितम् ।
अतीव सौम्यमोङ्कार-रूपं ऊर्ध्वमुखं यजेत् । ।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः ध्यानं समर्पयामि ।

आवाहन

ॐ नमस्तेरुद्र मन्य व उतो त इषवे नमः ब्राह्म्यामुत ते नमः । ।

एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशांकमौलेवृष-भाधिरुढ ।
 देवाधिदेवेश महेश नित्यं गृहाण पूजां भगवन् नमस्ते ।
 आवाहयामि देवेशमादिमध्यान्तवर्जितम् ।
 आधारं सर्वलोकानामाश्रितार्थं प्रदायिनम् । ।
 ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आवाहनं समर्पयामि ।
 (अक्षत छिड़क दें)

आसन

ॐ याते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी ।
 तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाक- शीहि । ।

नैवेद्य

नैवेद्य के ऊपर बिल्वपत्र या पुष्प प्रोक्षण करते हुए
 रुद्र-गायत्री बोलें--

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्
 फिर नैवेद्य पर धेनुमुद्रा दिखाते हुए निम्नांकित मंत्र

बोलें --

ॐ अवतत्य धनुष्ट्व (गूं) सहस्राक्षश-
 तेषुधे । निशीर्य शल्यानाम्मुखा शिवो नः सुमना भव । ।
 नैवेद्यं षड्रसोपेतं विषशन् घृतान्वितम् ।
 मधुक्षीरापमूयुक्तं च गृह्यतां सोमशेखर । ।
 ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
 बृहस्पतिप्रसूस्तानो मुञ्चत्व (गूं) हसः ।

यस्य स्मरण मात्रेण सफला सन्ति सत्क्रियाः ।
 तस्य देवस्य प्रीत्यर्थं इदं ऋतुफलार्पणम् । ।
 ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि नाना ऋतुफलानि
 च समर्पयामि ।

फिर आसनमुद्रा से निम्नांकित उच्चारण करें --

ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा,
 ॐ उदानाय स्वाहा ॐ समानाय स्वाहा ।
 ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मध्ये पानीयं समर्पयामि, नैवेद्यान्ते
 आचमनीयं समर्पयामि, उत्तरापोषणं समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनं
 *समर्प- यामि, मुखप्रक्षालनं समर्पयामि ।
 ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः करोद्धर्तनार्थं चन्दनं समर्पयामि ।
 भगवान के हाथों में चन्दन अर्पित करें ।

ताम्बूल

ॐ नमस्तऽआयुधायानातताय धृष्णवे ।
 उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने । ।
 ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मुखशुद्ध्यनार्थं ताम्बूलं समर्पयामि ।

दक्षिणा

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत् । स
 दाधार पृथिवीन्धामुतेमाङ्ग- कस्मै देवस्य हविषा विधेम । ।
 ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः सांगता सिद्ध्यर्थं हिरण्यगर्भ दक्षिणां
 समर्पयामि ।

नीराजन

ॐ इद (गूं) हविः प्रजननम्मे अस्तु दश- वीर (गूं) सर्वगण (गूं)
स्वस्तये । आत्म- सनि । प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनिः ।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ।

ध्यान करें

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पत्रगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवंशकरम् । ।
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम् ।
नागं पाशं च घंटां डमरुकसहितं सांकुशं वामभागे
नानालंकारदीप्तं स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि । ।
कर्पूरगौरं करुणं हितारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि । ।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नीराजनं दर्शयामि ।

जल आरती

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष (गूं) शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः
शान्तिर्ब्रह्माशान्तिः सर्व (गूं) शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा

शान्तिरेधि ।

प्रदक्षिणा

ॐ मा नो महान्तमुत मा नोऽअर्भकम्मानऽ- उक्षन्त मुत
मा नऽउक्षितम् । मा नो वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः
प्रियास्तन्वोरुद्ररीरिषः ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

पुष्पांजलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि
प्रथमान्यासन् । तेह ना कं महिमानः संचन्त यत्र पूर्वे साध्याः
सन्ति देवाः । ।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं
वैश्रवणाय कुर्महे स मे कामान् कामकामाय मह्यम् ।
कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । । कुबेराय वैश्रवणाय
महाराजाय नमः । ।

ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं
पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्त- पर्यायी
स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादा- परार्धात् । पृथिव्यै
समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष शलोकोऽभिगीतो
मरुतः परिवष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे । आविक्षितस्य
कामप्रेर्विश्वे- देवाः सभासद इति । ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मंत्र-पुष्पांजलिं समर्पयामि ।

नमस्कार

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय
च नमः शिवाय च शिवतराय च ।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वर ।
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः । ।
त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे ।
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नमः । ।
गंगाधर नमस्तुभ्यं वृषभध्वज नमोस्तु ते ।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो-भूयो नमो नमः । ।
ॐ निधनपतये नमः । निधनपतान्तिकाय नमः । ऊर्ध्वाय नमः ।
ऊर्ध्वलिंगाय नमः । हिरण्याय नमः । हिरण्यलिंगाय नमः ।
सुवर्णाय नमः । सुवर्णलिंगाय नमः । दिव्याय नमः । दिव्यलिंगाय
नमः । भवाय नमः । भवलिंगाय नमः । शर्वाय नमः । शर्वलिंगाय
नमः । शिवाय नमः । शिवलिंगाय नमः । ज्वालाय नमः । ज्वललिंगाय
नमः । आत्माय नमः । आत्मलिंगाय नमः । परमाय नमः ।
परमलिंगाय नमः ।

एतत् सोमस्य सूर्यस्य सर्वलिंग (गूं) स्थापयति पाणि मंत्रं पवित्रम्
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नमस्करोमि ।

प्रार्थनापूर्वक क्षमापन

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर । ।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत् पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे । ।
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर । ।
क्षमस्व देव देवेश क्षमस्व भुवनेश्वर ।
तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ।
असारे संसारे निज भजन दूरे जडधिया ।
भ्रमन्तं मामन्धं परम-कृपया पातुमुचितम् । ।
मदन्यः को दीन-स्तव कृपण-रक्षति-निपुण ।
स्त्वदन्यः को वा मे त्रिजगति शरण्यः पशुपते । ।

विशेषार्घ्य

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर । ।
रक्ष-रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्यरक्षक-
भक्तानां अभयकर्ता त्राता भव भवार्णवात् । ।
वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येन फलदोस्तु सदा मम । ।

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषिमानो
गोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः । मानो वीरान्द्रुद्र भामिनो बधीर्हीविष्मन्तः
सदमित्त्वाहवामहे ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि ।

अर्घ्य-पात्र में जल, गन्धाक्षत-पुष्प, बिल्वपत्र, फल आदि मंगल
द्रव्य लेकर भगवान को अर्पित करे।

समर्पण

गतं पापं गतं दुःखां गतं दारिद्र्यमेव च।
आगता सुख सम्पत्तिः पुण्यां च तव दर्शनात्।।
देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत्।
देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोहमेव हि।।
साधुवाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत् सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम।।

शंख या आचमनी का जल देव के दक्षिण हस्त में देते
हुए समस्त पूजा-फल उन्हें समर्पित करें -
अनेनकृत पूजाकर्मणा श्रीसंविदात्मकः साम्बसदाशिवः प्रीयन्ताम्।
ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।

इसके बाद वैदिक, गृहस्थ या संस्कृत आरती कर
पुष्पांजलि दें।

आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी- सहितं नमामि।।
जय शिव ॐकारा, भज शिव ॐकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा।। १ ।।

ॐ हर हर०

एकानन चतुरानन पंचानन राजे।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजे ।। २ ।।
ॐ हर हर०

दो भुज चारु चतुर्भुज दशभुज अति सोहै।
तीनो रूप निरखते त्रिभुवन-जन मोहे ।। ३ ।।
ॐ हर हर०

अक्षमाला वनमाला रूडमाला धारी।
त्रिपुरानाथ मुरारी करमाला धारी ।। ४ ।।
ॐ हर हर०

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ।। ५ ।।
ॐ हर हर०

कर मध्ये इक मण्डल चक्र त्रिशूल धर्ता।
सुखकर्ता दुखहर्ता, सुख में शिव रहता ।। ६ ।।
ॐ हर हर०

काशी में विश्वनाथ विराजे नंदा ब्रह्मचारी।
नित उठ ज्योत जलावत दिन-दिन अधिकारी ।। ७ ।।
ॐ हर हर०

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर ॐ मध्ये ये तीनों एका ।। ८ ।।
ॐ हर हर०

त्रिगुणा स्वामी की आरती जो कोई नर गावे
ज्योरां मन शुद्ध होय जावे, ज्योरां पाप परा जावे
ज्योरे सुख संपति आवे, ज्योरां दुःख दारिद्र्य जावे
ज्योरां घर लक्ष्मी आवे भणत भोलानन्द स्वामी,
रटत शिवानन्द स्वामी इच्छा फल पावे ॥६॥

ॐ हर हर०

जै शिव ॐ कारा ।
मन भज शिव ॐ कारा ।
मन रट शिव ॐ कारा ।
हो शिव भूरी जटावाला ।
हो शिव दीर्घ जटा वाला ।
हो शिव भाल चन्द्र वाला ।
हो शिव तीन नेत्र वाला ।
हो शिव ऊपर गंगधारा ।
हो शिव बरसत जलधारा ।
हो शिव तीव्र नेत्र वाला ।
हो शिव गल बिच रुण्डमाला ।
हो शिव कम्बु ग्रीव अंग वाला ।
हो शिव भष्मी अंग वाला ।
हो शिव फणिधर फण धारा ।
हो शिव वृषभ स्कन्ध वाला ।

हो शिव ओढ़त मृग छाला ।
हो शिव धारण मुण्डमाला ।
हो शिव भूत-प्रेत वाला ।
हो शिव बैल चढण वाला ।
हो शिव पारबती प्यारा ।
हो शिव भक्तन हित कारा ।
हो शिव दुष्ट दलन वाला ।
हो शिव पीवत भंग प्याला ।
हो शिव मस्त रहन वाला ।
हो शिव दरसन दो भोला ।
हो शिव परसन हो भोला ।
हो शिव बरसो जलधारा ।
हो शिव काटो जमफासा ।
हो शिव मेटो जमत्रासा ।
हो शिव रहते मत वाला ।
हो शिव ऊपर जलधारा ।
हो शिव ईश्वर ॐ कारा ।
हो शिव बम बम बम भोला ।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, भोले भोलेनाथ माहदेव
अर्धांगी धारा ।

ॐ हर हर हर महादेव ।

आरती किस प्रकार करें

शिव की आरती में सबसे पहले शिव के चरणों का ध्यान करके चार बार आरती उतारें, फिर नाभि कमल का ध्यान करके चार बार, फिर मुख का स्मरण करके एक बार तथा सर्वांग की सात बार, इस प्रकार चौदह बार आरती उतारें। इसके बाद शंख में या पात्र में जल लेकर घुमाते हुए छोड़ें और निम्न मंत्र पढ़ें--

ॐ द्यौः (ह) शांतिरन्तरिक्षं (गूं) शांतिः (हि)
पृथिवी शांतिरापः (शांतिरोषधयः) (ह) शांतिः (हि)
वनस्पतयः (ह) शांतिर्विश्वेदेवा (ह) शांतिः (हि)
ब्रह्मशांतिः (हि) सर्व (गूं) शांतिः (हि) शांति रे वशान्तिः •
(हि) सामाशान्तिरेधि । ।

आरती के बाद भक्ति - भाव से सिर झुकाकर शिव स्तुति करें--

असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिंधुपात्रे,
सुरतरुवरशाखा लेखिनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानां मीश पारं न याति । । १ । ।
वन्दे देवउमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पत्रगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम् ।
वन्दे सूर्यशशांक-वह्निन्नयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं,

वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम् । । २ । ।
शांतं पद्मासनस्थं शशिधर मुकटं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रं ।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम् । ।
नागं पाशं च घन्टां डमरुक सहितम् सांकुशं वामभागे,
नानालंकरायुक्तं स्फटिकमणिनिभंपार्वतीशं नमामि । । ३ । ।

फिर हाथों में पुष्प लेकर मंत्र पुष्पांजलि पढ़ते हुए सदाशिव को पुष्प अर्पण करें--

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्
तेहनाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः । । १ । ।
ॐ राजाधिराजाय प्रसन्न साहिने । । नमो वयं वैश्रवणाय
कुर्महे । स मे कामान् काम- कामाय मह्यम् । । कामेश्वरो वैश्रवणो
ददातु । । कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः । । २ । ।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं
महाराज्यमाधिमत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष
आन्तादापरार्धात्पृथिव्यै समुद्र पर्यन्तायां मेकराडिति । । तदप्येष
श्लोको भीगितो मरुतः परिवेष्टारो मरुतस्यावसन् गृहे । ।
आविक्षितस्य काम प्रेर्विश्वे देवाः सभासद इति । ।
(इति मंत्र पुष्पांजलिं समर्प्य)

प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि ज्ञाताज्ञातकृतानि च ।
तानि सर्वाणि विनश्यन्ति प्रदक्षिणे पदे पदे । ।

★★★

शिव पूजन

में ध्यान देने योग्य बातें

सिद्ध महात्माओं, प्रकाण्ड

विद्वानों एवं शास्त्र ग्रन्थों के आधार पर शिव पूजन में ध्यान देने व सावधानी रखने योग्य बातें स्पष्ट की जा रही हैं, जिससे कि साधकों को शीघ्र ही फल प्राप्ति हो।

१. शंकर की पूजा स्नान करके ही करनी चाहिए और नीचे धोती पहिनना आवश्यक है, धोती लांगदार पहिने, तहमत की तरह धोती लपेटकर पूजा करना ठीक नहीं माना गया है।

२. भगवान शिव की पूजा के साथ ही साथ मां पार्वती की पूजा भी आवश्यक मानी गयी है, इससे पूर्व गणपति पूजन भी आवश्यक है।

३. शिव पूजन उत्तर की तरफ मुंह करके करना चाहिए क्योंकि जहां शिवलिंग स्थापित हो उससे पूर्व दिशा का आश्रय लेकर न बैठें या न खड़ें हों, क्योंकि यह दिशा भगवान शिव के सामने पड़ती है। शिवलिंग से उत्तर में न बैठें, क्योंकि उधर शिव का

४३

वामांग है, जिसमें शक्ति स्वरूप देवी उमा विराजमान है। पूजक को शिवलिंग से पश्चिम दिशा में भी नहीं बैठना चाहिए क्योंकि वह भगवान शिव का पीठ भाग है। पीछे की ओर से भी पूजा करना भी उचित नहीं है, अतः साधक को अपना मुंह उत्तर की ओर करके ही पूजन करना चाहिए।

४. जो साधक शिव की पूजा करे उसे त्रिपुण्ड अवश्य लगाना चाहिए, और यदि रुद्राक्ष की माला पहिन कर पूजा करे तो ज्यादा उचित माना गया है।

५. विल्व - पत्र शुद्ध ताजे हों, वे टूटे-फूटे न हों।

६. जो वस्तुएं अपवित्र स्थान में पैदा हुई हों, या अपवित्र वस्तु स्पर्श की हुई हो, या किसी से चोरी आदि से प्राप्त की हुई हो, तो ऐसी कोई वस्तु या पदार्थ शंकर की पूजा में प्रयोग नहीं करना चाहिए।

७. साधक को अपने महीने की कमाई में एक दिन की कमाई अवश्य ही पूजा या साधना में व्यय करनी चाहिए।

८. जहां तक हो सके स्वयं ही शंकर की पूजा करनी चाहिए, किसी ब्राह्मण आदि का उपयोग इस कार्य के लिए कम से कम करें।

९. सड़े गले पुष्पों का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए, बिना सुगन्ध के पुष्पों का प्रयोग भी वर्जित है। इसके अलावा मालती, कुन्द, रक्तजवा, या गुलमोहर, मोतिया, केतकी, केवड़ा, पलास,

सिरस और मेंहदी के पुष्प भूल कर के भी भगवान शंकर को नहीं चढ़ाने चाहिए।

१०. गणेश जी को तुलसीदल तथा मां पार्वती को दूर्वा नहीं चढ़ानी चाहिए।

११. पत्र, पुष्प, फल ये सभी मुख नीचे करके नहीं चढ़ाने चाहिए। विल्व - पत्र डंठल तोड़कर उल्टे करके चढ़ाने चाहिए।

१२. पुष्पों को धोकर नहीं चढ़ाना चाहिए अपितु सीधे पौधों से तोड़कर उसी प्रकार से भगवान शंकर को चढ़ाने चाहिए।

१३. भगवान शंकर कमल, गुलाब, कनेर, सफेद आक या मदार पुष्प से ज्यादा प्रसन्न होते हैं, धतूरा उन्हें सबसे अधिक प्रिय है।

१४. विल्व - पत्र, खेजड़ी, आँवला, तमाल पत्र, और तुलसी-इनके पत्ते टूटे-फूटे होने पर भी पूजा में ग्रहण करने योग्य माने गये हैं। विल्व पत्र, कुंद, तमाल, आमला, तुलसी, कमल के पुष्प आदि एक दिन पहले लाकर भी पूजा में प्रयोग किये जा सकते हैं क्योंकि इनको बासी होने का दोष नहीं लगता।

१५. भगवान शिव की पूजा में संस्कृत पढ़ना आवश्यक नहीं है, अपितु अपनी मन की भावनाओं से भी उनकी पूजा की जा सकती है।

१६. जो स्त्रियां शिव पूजन करती हों, यदि उनके बालक का जन्म हो तो उनको दस दिन तक सूतिकागृह में ही भगवान

शिव की मात्र मानसिक पूजा करनी चाहिए।

१७. शिव पुराण में बताया गया है कि वशिष्ठ की पत्नी अरुन्धती भगवान शंकर की भक्त थी, और तपस्या करके शंकर को प्रसन्न किया था। इसी प्रकार अनुसूया, सीता, रुक्मिणी, जाम्बवन्ती आदि अनेक स्त्रियों ने भगवान शिव की पूजा की है, कुमारी कन्याएं सुन्दर वर प्राप्ति हेतु बाल्य काल से ही शिव पूजा कर सकती हैं।

१८. विवाह होने के बाद प्रत्येक स्त्री को चैत्र शुक्ला तृतीया के दिन अपने सौभाग्य की रक्षा के लिए शिव पार्वती की पूजा करनी चाहिए।

१९. शिव की आधी परिक्रमा ही की जाती है, भूल करके भी शिव मन्दिर में शिव की पूरी परिक्रमा नहीं करनी चाहिए।

२०. शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण नहीं करना चाहिए, पर शिव के सामने जो फल या प्रसाद रक्खा हो उसे ग्रहण किया जा सकता है।

२१. लक्ष्मी प्राप्ति के लिए भगवान शंकर की कमल या विल्व-पत्र से पूजा की जानी चाहिए। एक लाख विल्व-पत्र चढ़ाने पर साधक को कुबेर के समान सम्पत्ति प्राप्त होती ही है।

२२. मोक्ष की इच्छा रखने वाले को एक लाख दर्भ के द्वारा शिव पूजा करनी चाहिए।

२३. सन्तान की इच्छा रखने वाले को भगवान शंकर पर एक लाख धतूरे के पुष्प चढ़ाने का विधान शास्त्रों में बताया गया है।
२४. भोग व मोक्ष दोनों प्राप्त करने वाले को आक के एक लाख पत्ते भगवान शंकर को चढ़ाने चाहिए।
२५. जो व्यक्ति एक लाख कनेर के पुष्प भगवान शंकर पर चढ़ाता है, वह अवश्य ही रोग मुक्त होता है।
२६. जो व्यक्ति एक लाख विल्व-पत्र शिव को चढ़ाता है उसके जीवन की प्रत्येक इच्छा पूरी होती है और उसे जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।
२७. जो व्यक्ति एक लाख चावल चढ़ाता है उसे लक्ष्मी प्राप्त होती है, पर इसमें एक भी चावल खण्डित नहीं होना चाहिए।
२८. एक लाख काले तिलों द्वारा भगवान शिव का पूजन करने से बड़े से बड़ा पाप भी समाप्त हो जाता है।
२९. एक लाख मूंग चढ़ाने पर जातक को सभी सुखों की प्राप्ति होती है।
३०. एक लाख अरहर के पत्तों द्वारा भगवान शिव का श्रृंगार करने से अनेक प्रकार की सुख-सम्पत्तियाँ प्राप्त होती हैं।
३१. शरीर पुष्टि हेतु एक लाख उड़द के दानों से भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए।
३२. यदि साधक गंगाजल से भगवान शंकर का अभिषेक करता

- है उसे निश्चय ही पुत्र सुख प्राप्त होता है, इसी प्रकार गाय के घी से अभिषेक करने पर वंश वृद्धि होती है। यदि चीनी मिलाकर गाय के दुग्ध से अभिषेक किया जाय तो घर में प्रेम और सुख-शान्ति बढ़ती है।
३३. यदि इत्र द्वारा भगवान शिव का अभिषेक धारा प्रवाह किया जाय तो उसे समस्त भोग्य पदार्थ प्राप्त होते हैं।
३४. भगवान शिव पर धारा प्रवाह करने वाला पात्र सोने, चांदी, ताँबे या मिट्टी से निर्मित हो, इसके अलावा अन्य धातु वर्जित है।
३५. प्रदक्षिणा शंकर के दाहिनी तरफ से प्रारम्भ की जानी चाहिए।
३६. भगवान शिव पर चढ़ाया हुआ नैवेद्य ग्रहण नहीं किया जाना चाहिए।

अनर्हं मम नैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम् ।
मम निवेद्य सकलं कूप एवं विनिःक्षिपेत् ।

(पद्मे शिबोक्ति)

भगवान् शंकर स्वयं कहते हैं कि मुझ पर चढ़ाये हुए नैवेद्य, पत्र, पुष्प, फल सभी कुएं में डाल देने चाहिए, भूल कर भी ग्रहण नहीं करना चाहिए।
परंतु जो शंकर का भक्त है या जिसके शंकर इष्ट हैं, उसे शास्त्र की भाषा में “चण्ड” कहा गया है अतः चण्ड, प्रसाद

भक्षण का अधिकारी माना गया है। ब्राह्मण स्वतः ही 'चण्ड' माने गये हैं अतः उन्हें प्रसाद ग्रहण कर लेना चाहिए।

३७. साधक को चाहिए कि भगवान शंकर के लिंग पर कोई पदार्थ न चढ़ावे अपितु उनके सामने रखना चाहिए। इस प्रकार की सामग्री या पदार्थ ग्रहण या भक्षण करने में कोई दोष नहीं है।

३८. शिव पुराण में बताया गया है--

अग्राह्यं शिवनैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम्।

शालिग्रामशिलासंगात् (स्वर्शति) सर्वं याति पवित्रताम्।।

(शिव पुराण वि. सं. २२/१६)

अर्थात् भगवान् शिव को चढ़ाये हुए नैवेद्य, पत्र पुष्प, फल, जल जो ग्रहण करने एवं भक्षण करने योग्य न हों, वे भी शालिग्राम शिला के संग रखने या स्पर्श करा देने पर सर्व प्रकार से पवित्र होकर, ग्रहण करने और भक्षण करने योग्य हो जाते हैं।

इस प्रकार साधक को यथा सम्भव शिव पूजा में सावधानी बरतनी चाहिए और उपरोक्त नियमों का पालन करना चाहिए।



जीवन को पूर्णता तक ले जाने में समर्थ हैं ये प्रामाणिक पुस्तकें

१. गुरु सूत्र	२०/-
२. निखिलेश्वरानन्द रहस्य	३०/-
३. मुहूर्त ज्योतिष	३०/-
४. हिमालय का सिद्ध योगी	३५/-
५. स्वर्ण तंत्रम्	३०/-
६. भौतिक सफलता साधना एवं सिद्धियां	३०/-
७. लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग	३०/-
८. महालक्ष्मी, सिद्धि एवं साधना	३०/-
९. विश्व की अलौकिक साधनाएं	३०/-

अपने निकटतम बुक स्टॉल से खरीदे
न मिलने पर लिखें

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन-०२६१-३२२०६